११. मयूर पंख

– जगन्नाथदास 'रत्नाकर'

(१)

भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की,
सुधि ब्रज गाँवनि मैं पावन जबै लगीं ।

कहै 'रतनाकर' गुवालिनि की झौरि-झौरि,
दौरि-दौरि नंद पौरि आवन तबै लगीं ।

उझकि-उझकि पद कंजनि के पंजनि पै,
पेखि-पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगीं ।

हमकौं लिख्यो है कहा, हमकौं लिख्यो है कहा,
हमकौं लिख्यो है कहा, कहन सबै लगीं ।।

(२)

कान्ह दूत कैधौं ब्रह्म दूत ह्वै पधारे आप,
धारे प्रन फेरन को मति ब्रजबारी की ।

कहै 'रतनाकर' पै प्रीति-रीति जानत ना,
ठानत अनीति आनि नीति लै अनारी की ।

मान्यो हम, कान्ह ब्रह्म एक ही कह्यो जो तुम,
तौहूँ हमें भावति ना भावना अन्यारी की ।

जैहै बनि-बिगरि न बारिधिता बारिधि की,
बूँदता बिलैहै बूँद बिबस बिचारी की ।।

(३)

धाईं जित-तित तैं बिदाई हेत ऊधव की,
गोपी भरीं आरति सँम्हारति न साँसुरी ।

कहै 'रतनाकर' मयूर-पच्छ कोऊ लिए,
कोऊ गुंज अंजली उमाहै प्रेम आँसुरी ।।

भाव-भरी कोउ लिए रुचिर सजाव दही,
कोऊ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी ।

पीत पट नंद जसुमति नवनीत नयौ,
कीरति-कुमारी सुरवारी दई बाँसुरी ।।

— ० —

परिचय

जन्म : १८६६, काशी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३२
परिचय : रत्नाकर जी केवल कवि ही नहीं, वरन वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा विद्वान भी थे । आपकी ब्रज भाषा की रचनाओं में सुंदर प्रयोगों एवं ठेठ शब्दावली का प्रभाव रहा है । आप स्वच्छ कल्पना के कवि हैं। आपके द्वारा प्रस्तुत दृश्यावली सदैव अनुभूति से सनी और संवेदना को जागृत करने वाली है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हिंडोला', 'उद्धव शतक', 'शृंगार लहरी', 'गंगावतरण', 'गंगा लहरी' आदि ।

पद्य संबंधी

यहाँ प्रसंग उस समय का है, जब श्रीकृष्ण के कहने पर उद्धव जी गोकुल में आए हुए हैं । प्रस्तुत पदों में गोपियों की उत्सुकता, उद्धव जी का ज्ञानबोध, गोपियों के उत्तर का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया गया है । अंतिम पद में गोकुलवासी श्रीकृष्ण के लिए अलग-अलग भेंट भेजते नजर आते हैं । इन पदों में ब्रज भाषा का सौंदर्य दर्शनीय है ।

शब्द वाटिका

दौरि-दौरि = दौड़-दौड़कर
झौरि-झौरि = झुंड-के-झुंड
पेखि-पेखि = देख-देखकर
ठानत = निश्चय
बारिधि = समुद्र
रुचिर = प्रिय
गुवालिन = ग्वालिन

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

गोकुलवासियों द्वारा कृष्ण के लिए भेजे उपहार

(२) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

१. उझकि-उझकि - ---------- लगीं ।
२. मान्यो हम, - ---------- अन्यारी की ।

(३) कृष्ण के लिए कविता में प्रयुक्त नाम →

(४) रिश्ते लिखो :

नंद ------ ← कान्हा → जसुमति ------

(५) निम्न काव्य पंक्तियों का अर्थ लिखो :

भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की,
सुधि ब्रज गाँवनि मैं पावन जबै लगीं ।

कल्पना पल्लवन मेरी कल्पना की 'दही-हाँड़ी' पर अपने विचार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो भारतीय संस्कृति की परंपरा प्राचीन है ।

भाषा बिंदु सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाओं के पाँच-पाँच वाक्य लिखो ।

उपयोजित लेखन विद्यालय में मनाए गए 'स्वच्छता दिवस समारोह' का वृत्तांत लिखो ।

MG9HFH

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन भक्त सूरदास का कृष्ण की बाल लीलाओं के गुणगान से संबंधित कोई एक पद एवं उसका अर्थ लिखकर चार्ट बनाओ ।